Pol. Sc.

Under Graduate Degree - IInd Paper 1st

Question: — Make a comparative estimate of Gandhism and Socialism.

गाँधीवाद और समाजवाद का तुलनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

महात्मा गाँधी एक सच्चे समाजवादी थे। वे व्यक्ति के हित के अपेक्षा समाज के हित को अधिक महत्व देते थे, वे समाज में समानता और स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। उनके अर्थव्यवस्था संबंधी विचारों में समाजवाद स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है, वे गरीबी और दरिद्रता को दूर करना चाहते थे। उनका ट्रस्टीशिप का सिद्धांत मूलतः समाजवादी है, ग्रामीण आर्थिक निर्भरता समाजवाद का ही दूसरा रूप है। लेकिन महात्मा गाँधी का समाजवाद अन्य विचारकों से भिन्न है। गाँधीवाद और समाजवाद तथा साम्यवाद के लक्ष्य समान है लेकिन दोनों के विपरीत गाँधीवाद साधनों की नैतिकता और उनके अहिंसात्मक रूप पर जोर देता है।

दूसरी ओर, साम्यवाद वर्ग-संघर्ष और हिंसक साधनों के प्रयोग को प्रश्रय देता है। समाजवाद के संबंध में गाँधीजी के विचार भिन्न है। उनके अनुसार "समाजवाद का जन्म उस समय नहीं हुआ था जबकि पूँजी के दुरुपयोग की बात चली। जैसा कि मैं कह चुका हूँ समाजवाद जहाँ तक की साम्यवाद भी ईशापनिषद के प्रथम स्त्रोत में झलकता है। सच तो यह है कि कुछ सुधारकों का हृदय-परिवर्तन के साधनों में विश्वास जाता रहा तो उस चीज का जन्म हुआ जिसे वैज्ञानिक समाजवाद कहते हैं। मैं उसी समस्या को सुलझाने में लगा हूँ जो कि वैज्ञानिक समाजवाद के सामने है।"

गाँधीवाद और समाजवाद की तुलनात्मक विवेचना करते हुए डॉ० पट्टाभि सीतारमैय्या ने कहा है कि "समाजवाद का उद्देश्य सबों को समान सुविधाएँ देना है तो गाँधीवादी का उद्देश्य है कि हर आदमी अपने समय और सुविधाओं का उच्च उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपयोग करें। यदि समाजवाद पूँजीकर, भारी अतिरिक्त आयकर, जब्ती और शक्ति द्वारा संपत्ति को पदच्युत करता है तो गाँधीजी युगों पुरानी परम्परा का

आह्वान करते हैं जिससे अमीरी के मुकाबले में निर्धनता को और धन के मुकाबले में त्याग को मान्य दिया गया है। यदि समाज अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघर्ष को सफलता लेता है तो गाँधीवाद अपनी सफलता के लिए प्रत्येक नागरिक के अन्तःकरण की उन्नति और संस्कृति के विकास पर विश्वास करता है। गाँधीवाद के छोटे परिणाम लोगों की सद्भावना के आधार पर मजबूत और गहरी जड़ जमा लेते हैं जबकि समाजवाद को यह दुःखद दृश्य देखना पड़ता है कि उसके पुजारी अपने सिद्धान्तों और शक्ति को स्थिर रखने के लिए तानाशाह बन गए। अधिकांश लोगों के लिए समाजवाद एक भ्रान्ति है जबकि गाँधीवाद एक कठोर सत्य है।" श्री रामनाथ सुमन ने अपनी पुस्तक गाँधीवाद की रूपरेखा में गाँधीवाद और समाजवाद के संबंध में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला है।

(i) गाँधीवाद समाजवाद की अपेक्षा अधिक व्यापक है। यह संपूर्ण जीवन का तत्वज्ञान सामने रखता है।

(ii) गाँधीवाद समाजवाद की अपेक्षा अधिक क्रांतिकारी है। य गाँधीवाद समाजवाद की अपेक्षा वर्तमान के हिंसापूर्ण आधार को बदलना चाहता है। उसका न केवल लक्ष्य वरन साधन भी क्रांतिकारी है।

(iii) गाँधीवाद समाजवाद की अपेक्षा मनुष्य के लिए अधिक स्वभाविक है। वह मनुष्य के रूप में प्राकृतिक एवं सात्विक भाव व प्रेम को जाग्रत करता है।

(iv) जब समाजवाद वर्तमान समाज-व्यवस्था के दोनों पक्ष पर केवल एक रोक का काम करता है तब गाँधीवाद वर्तमान समाज-व्यवस्था के दोषों पर केवल आघात करता है और बड़े कारखानों का नाश एवं छोटे-छोटे गृह उद्योग का निर्माण करता है।

(v) गाँधीवाद व्यक्ति एवं समाज दोनों को स्थिर रखते हुए दोनों के बीच संबंध स्थापित करता है किन्तु समाजवाद में व्यक्ति के व्यक्तित्व और स्वतंत्रता का लोप हो जाता है।

(vi) गाँधीवाद प्रत्येक स्थिति में व्यवहारिक है।

(vii) समाजवाद विभेदात्मक और विनाशात्मक है। गाँधीवाद समन्वयात्मक तथा रचनात्मक है।

(viii) समाजवाद के लक्ष्यों को गाँधीवाद पूरा करता है।

Scanned with CamScanner

(ix) गाँधीवाद ने कुचली, हीन, दुर्बल जातियों ~~[illegible]~~ व्यक्तियों एवं राष्ट्रों के हाथों में हिंसा का नवीन अस्त्र दिया।

(x) भारतवर्ष की दृष्टि से गाँधीवाद भारतीय प्रतिभा, ~~के~~ कल्पना ~~एवं मानव जातियों~~ ~~[illegible]~~ ~~एवं राष्ट्रों के~~ भावना मानव के अधिक अनुकूल है, क्योंकि उसका आविर्भाव विश्वकल्याण की अविरोधी भारतीय संस्कृति के मंथन से हुआ है।

अन्त में निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि गाँधीजी के विचारों पर दृष्टिपात करते हैं तो मालूम पड़ता है कि उनके विचार कोरे स्वप्नलोकीय थे। उनका आदर्श था कि समाज राज्यहीन और वर्गहीन होगा। ऐसे समाज को व्यावहारिक रूप देना असंभव ~~सा~~ सा है। वे ग्रामीण समाज, विकेन्द्रीकरण तथा ट्रस्टीशिप के समर्थक थे। गाँधीजी ने इन आदर्शों को औद्योगिक युग में व्यावहारिक रूप देना अत्यन्त कठिन है। साथ ही, इन्हें अप्रगतिशील कदम भी कहा जा सकता है। निःसंदेह गाँधीवाद के कार्यक्रमों को व्यावहारिक रूप देना एक कठिन कार्य है। फिर भी, उन्हें एक रचनात्मक आदर्शवाद कह सकते हैं।

Scanned with CamScanner